अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : तृतीय – जैन धर्म प्रथमा (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

समय : 3 घण्टे   अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) ....

(शब्दों में) ....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या : [ ]

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दें। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य है -

(क) ज्ञान के अतिचारों की शुद्धि (ख) दर्शन के अतिचारों की शुद्धि

(ग) चारित्राचारित्र व तप पर लगे अतिचारों पर शुद्धि (घ) उपर्युक्त सभी ( )

(b) ''श्रावक-श्राविकाओं के लिये जानने योग्य है, किन्तु आचरणीय नहीं''-

(क) दान (ख) कर्मादान

(ग) प्रदान (घ) सम्मान ( )

(c) 'अचित्त वस्तु सचित्त पर रखी हो' किस व्रत का अतिचार है -

(क) पौषध व्रत (ख) देशावगासिक व्रत

(ग) अतिथि संविभाग व्रत (घ) उपभोग परिभोग परिमाण व्रत ( )

(d) दृश्य-अदृश्य रूप धारण करने की क्रिया वाला शरीर है -

(क) वैक्रिय शरीर (ख) औदारिक शरीर

(ग) कार्मण शरीर (घ) आहारक शरीर ( )

(e) दान की शक्ति को प्रभावित करने वाला कर्म है -

(क) गौत्र कर्म (ख) नाम कर्म

(ग) अंतराय कर्म (घ) मोहनीय कर्म ( )

(f) 'सर्वज्ञ प्रणीत मत के सिवाय अन्य मत वालों के साथ सहवास, संलाप आदि रूप में परिचय करना कहलाता है-

(क) पर पाखण्डी प्रशंसा (ख) पर पाखण्डी संस्तव

(ग) वितिगिच्छा (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ( )

(g) ऋषभदेव ने अक्षर ज्ञान, व्याकरण छंद, न्याय, काव्य आदि का ज्ञान दिया-

(क) ब्राह्मी को (ख) सुन्दरी को

(ग) सुमंगला को (घ) उपर्युक्त सभी को ( )

(h) 'अरिहन्त देव का क्या कहना' प्रार्थना के रचयिता हैं -

(क) आचार्य हस्ती (ख) आचार्य हीरा

(ग) मुनि गौतम (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं ( )

(i) 'धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर करना' कहलाता है -

(क) प्रभावना (ख) स्थिरीकरण

(ग) वात्सल्य (घ) निर्विचिकित्सा ( )

(j) 'दाम बिना निर्धन दु:खी, तृष्णावश धनवान' इस पंक्ति में कौनसी भावना बताई गई है -

(क) अशरण भावना (ख) एकत्व भावना

(ग) संसार भावना (घ) अनित्य भावना ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) धर्म के फल में संदेह करना वितिगिच्छा है। ( )

(b) जिन्होंने कुशील सेवन का जीवन भर के लिए त्याग कर दिया है, उन्हें स्वदार संतोष परदार विवर्जन शब्द बोलने चाहिए। ( )

(c) 'परिग्रह' पाप का भेद है। ( )

(d) वैक्रिय तथा आहारक शरीर सभी संसारी जीवों में पाये जाते हैं। ( )

(e) शास्त्र के अनुसार कविता रचकर धर्म की उन्नति करने वाला कवि प्रभावक होता है। ( )

(f) उक्कलिया, मण्डलिया तेउकाय के जीवों का शरीर है। ( )

(g) अपराधियों को दण्ड द्वारा शिक्षा देकर कुशल नागरिक बनाने वालों को क्षत्रिय कहते हैं। ( )

(h) भगवान ऋषभदेव का 'च्यवनकल्याणक' माघ कृष्णा त्रयोदशी को हुआ था। ( )

(i) स्वस्थ जीवन के लिए स्वच्छ एवं शुद्ध पर्यावरण आवश्यक है। ( )

(j) 42 दोष टालकर निर्दोष भिक्षादि ग्रहण करना एषणा समिति है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) भत्त-पाणी का विच्छेद किया हो, मेरा अतिचार है। ....

(b) पाप-शल्य को निकालने का मैं एक अमोघ साधन हूँ। ....

(c) मुझ में पन्द्रह योग पाये जाते हैं। ....

(d) मैं मोक्ष की तीव्र इच्छा वाला लक्षण हूँ। ....

(e) मेरा विवाह सुमंगला के साथ हुआ था। ....

(f) भगवान ऋषभदेव को ईख का रस पिलाने के लिए मुझको जातिस्मरण ज्ञान हुआ। ....

(g) मुझसे जीव नीच गोत्र का क्षय करता है। ....

(h) मैं सुर-असुरों से पूजित हूँ। ....

(i) मैं महाव्रत समिति गुप्ति का आराधक हूँ। ....

(j) मैं एक ऐसा प्रदूषण हूँ, जिसके पीने से विविध बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। ....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) नवमाँ सामायिक व्रत के अतिचार लिखिए।

....

....

(b) दूजे स्थूल के कोई दो अतिचार लिखिए।

....

....

(c) दर्शन समकित के कोई दो अतिचार लिखिए।

....

....

(d) आगम के प्रकार लिखिए।

....

....

(e) इच्छामि णं भंते का पाठ लिखिए।

....

....

(f) कृष्ण लेश्या को परिभाषित कीजिए।

....

....

(g) चक्षुदर्शन किसे कहते हैं ?

....

....

(h) आगार किसे कहते हैं ?

....

....

(i) आस्था लक्षण को परिभाषित कीजिए।

....

....

(j) भावना किसे कहते हैं ?

....

....

(k) कोई पूजे देव सरागी को .... क्या कहना।। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

....

....

(l) भगवान ऋषभदेव की जीवनी से मिलने वाली दो शिक्षाएँ लिखिए।

....

....

(m) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

धन जन...

....ज्ञान।।

(n) जघन्य वंदना कब करनी चाहिए ?

....

....

....

....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) ज्ञान के अतिचारों के नाम लिखिए।

....

....

....

....

....

(b) सातवें व्रत के अतिचारों को लिखिए।

....

....

....

....

....

(c) संलेखना (तप) के पाँच अतिचार लिखिए।

....

....

....

....

....

(d) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

इच्छामि खमासमणो..

....

....

....

....

....दिवसो वइक्कंतो।।

(e) रसनेन्द्रिय बल प्राण किसे कहते हैं ?

....

....

....

....

....

....

(f) अयोगी केवली गुणस्थान को समझाइए।

....

....

....

....

....

....

(g) शुद्धि को परिभाषित कर उसके भेदों को समझाइए।

....

....

....

....

....

....

(h) विनय को परिभाषित कीजिए। विनय भक्ति के कोई तीन प्रकार लिखिए।

....

....

....

....

....

....

(i) नैमित्तिक प्रभावक, तपस्वी प्रभावक को समझाइए।

....

....

....

....

....

....

(j) राजाभियोग आगार को समझाइए।

....

....

....

....

....

....

(k) अक्षय तृतीया को तप त्याग के रूप में क्यों माना जाता है ?

....

....

....

....

....

....

(l) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

पाँच नमन सब पाप ....

....

....

....

....

....भवपार परमेष्ठी।।

(m) निर्जरा भावना के दोहे लिखिए।

....

....

....

....

....

....

(n) ईर्या समिति को समझाइए।

....

....

....

....

....